No. ४७६३

Title शिवकाण्डे पञ्चदशीयंत्रमाहात्म्यम्

Author ×

Extent ५ पत्राणि Age ×

Subject तंत्रम

4763

पंचदशी यंत्रमालात्मकम् शिवकाण्डे

४७६३

पं० द० यंत्र०
१

८	१	६
३	ॐ ५ ह्रीं क्लीं श्रीं	७
४	९	२

नमः स्वयंभेवषट्त्वरूपेवोषटा
कर्षणो विष्णुः ॥ स्वाहा प्रष्टोह
पांगतो ह्रिष्येवमावलोमध्या १
कुंद्वेषिफटोस्वाहे प्रष्टोनेपल्ल
वाःस्मृताः पल्लवेन विना मंत्रं
यंत्रं च निष्फलं भवेत् ॥ ॐ ह
ह्रांमनेनारायणाय स्वाहा ॥
जप १०००० सर्वकार्यसिद्ध्यर्थे
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चारो पांच वें भ्रंक
गिर्दे लिखे ॥ ॐ यंत्राय विद्महे महायंत्राय धीमहि तन्नो यं
त्रः प्रचोदयात् ॥ इति यंत्रगायत्री जप वीसांश्रुधा यंत्र केमंत्रा
का ॥ ॐ हरिं श्रीं हरः ॥ इति सर्वोपरि मंत्रः श्रू० स्त्री ध क्ली
लिखी का श्री मो श्री ॥ ॐ श्रीभगवत्यै नमः अथ पञ्च
दशामहायंत्रराजस्य माहात्म्यं लिख्यते ॥ दोहा शंकरजू कै
लासमें एकसमें सावराज श्रीगिरिजाजू संग हैं प्रति प्रसन्न
महाराज १ नमस्कार प्रार्थना करी गिरिजाजी सहवनाई वि
धी पंचदशायंत्रकी कृफो चाहो मांदि २ शंकर उवाच भगव
ति पंद्रहकी विधी सुनहु सचित लगाई प्रथम अमल छूद्ह
ने स्याही लेहु बनाई ३ शुभदिन शुभनक्षत्रमें भूर्जपत्रके

नाउ भूर्यपत्रकाकदपरलिखि पविधिवैरवनाउ एकाक्ष ॥
जानीसत्री चौथापंचाहोइ छठासातवां आठवानवमग्र
कहेंजोइ ॥५ इनसोष्टरयपंत्रकोचतुरकोनवकोठ ॥ न
वेनवलदलचटचवपेइहमंत्रइककोठ ६ ॐ ह्रिं श्रीं ह
रः ॥ इतिमंत्रयंत्रकोजानलत्तभयपत्रिनियंत्रकोपहविधि
तंरूपहिचान ७ एकाक्षारीहविषभषिभूषाईनवहोइ
ब्रह्मचर्यसंयुक्तजबहोइजनवालिखेपी कोइ ८ रक्तासन
रक्ताहिपटकुंरक्तमालकोधारि कुंभस्थापनकरिजहोद्दी
पकसन्मुखबारि ९ प्रथमगणेशादिपूजके गुरूपूजे
चितलाइ अष्टमूर्तिभगवतीकीपूजाकरेयनाइ १०॥
मात्रोक्तनवपूजके वंदीमोचनहोत अलनाडारिस्वभू
मिपरअयुतलिखेफलदेत ११ दाडिमकलमवनाइके
इहविधिलिखेजकोइ शीघ्रकालनाकोहनोवंदीमोच
नहोइ १२ शिलाकाष्टमृत्तनिकरीचंदनलेपसंयुक्त
चित्रजकाकदपैलिखीप्रतिमास्वर्णकीउत्त १॥ श्रोर
मनोमयजानियेइकस्टानिकाकीगंति रत्नमनिनकीसहित
हरिप्रतिमाष्टरनसंति २॥ ॥० ॥०००००००००

पं॰ २
यं॰
२

२० यंत्र ८

१ ६ ४ ७ ३ २ ८ १० ५

सर्वकार्यार्थी यति

अष्टकपत्त विखे भुर्जीपत्र पे
लिखि अष्टगंधसे हुगंध अ
नारु अनेपूजा करे अथ
अष्टगंध। चंदन १। अग
र २। कस्तूरी ३। लाक्षा
४। कर्पूर ५। कुंकम ६
देवदारु ७। यंत्र १०८ मंत्र
१००० जपे हवनदशांश क
रे मंत्रः ह्रीं क्लीम
म सर्ववांछितंदेहिदेहिस्वाहा स्वाहा १॥
ॐश्रीभगवत्यैनमः ॥ ॐगंगंगायगणपतिये विघ्नवि
नाशायैस्वाहा ॥ दिन ११ जपे संख्या ११०० मंत्रश्री
जीतुलसीकेचवुतरेपेजपे संख्या १०००० ॐ ई ऐं
नमः ॐ ई क्लीं नमः। जोचाहेसोहे ॥ पंचदशायं
त्रविधि आद मंत्रसुंदरीजी १२५००० जपेरुद्राक्ष
मालातेदशांशा हवनकरे मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं फ
ट्स्वाहा ॥ ॥ युगलस्मयुतालीविराजगानिमामिति

इसो जात ॥ तीन अयुत लिखे पत्र मे विजय प्राप्ति पहिचान
१३। स्वापान ग्रह को लिखे वेद अयुत जो कोइ। षट अयुत
हि निर्द्धन जो मनुष्य रोग की होइ १४। सप्त अयुत ते लक्ष्मी
पति की तुल्लता पाइ। अष्ट अयुत दायक सदा अष्ट सिद्ध
के जाइ १५ समता लेन बनाय की नव अयुत जो कीन।
दश अयुत जो जन करे सम सम होइ प्रवीन १६ ॥ द्वितीय
प्रकार: मृगमद गोरोचन जु लेके सब माहि मिलाय स
त्न अर्थ के हेत जो काऊ लिखि बनाइ १७। अरि को डर वे
के हेत लिखि कनक सार को लाइ। मोहन अर्थ सभ लो
क के नित दस बार लिखाइ १८ ॥ आकर्षण हेत नित हि
२ दशाभ सो एप यंत्र ॥ कीर्ति हेतु हं जान लेमी सु लिखि समनं
१५०॥
त्र २६ ॥ चालीस वा सत नित लिखि अयुत प्रयोग हि साथ
जो जो चाहै सो करै नि। रुचै चित्त मे बांध २० ॥ अर्कवार
को आक के डुगथे यंत्र भरे जु। भस्म मसान रला इ के चित्त मे
ता हिय रैज़ु २१ ॥ अरि कु नाम संयुक्त लिखि जे डारे चित्त माहि
इह मान मंत्र प्रथम पढै अरि विद्धिन होइ तां हि २२ ॥ सोस

दिवसाशीतरवीगुंजासेतन्हसाइ अरुकापिलादीरमे
केसरसंगामिलाइ २३ ॥ भूर्जपत्रपैलिखिजबयकंठे।
वाकुबांधि भूपतिवशहोवैसदानिश्चयकुकेसाधि २४
भौम -- काकपक्षकलमजोकाकरकसोलिखि भू
तकवस्त्रपैयंत्रलिखिअरुअरिनामविशेष २५ ॥जा
केघरमेगाडिदेलांचनहोइनिदान । ताकोनिश्चयजा
नियेउच्चाटनपरमान २६ ॥ बुधवासरगोरोचनहि
केसरसोंलिखिजाइ काकहुपैलिखिकेतिसैबातीए
कबनाइ २७ ॥नरकपालमेंवाविंयेसरसोंतेलभ्रना
इ दीपकवालकपालमेंकाजललेउबनाइ २८ ॥का
जललेइकेपालनेंवाकोआंजैजोइ नरनारीजेदेखिहै
मोहनसमकोहोइ २९ ॥ गुरुवासरगोरोचनहितगर
हरिद्रालेहि इक्षिहनसोंलिखियंत्रकोहित्नामस
हिदेहि ३० ॥ शत्रुआसनलपटेमवाहितकोथान
आकर्षणननकालहैएजानोपरमान ३१॥ भृगुदि
नलेवेचर्चकोकुंकुमअवोरकपूर मधुसेंपावीधियंत्रको

भूर्जपत्रपै धरु ३२॥ सीसकेऊभुजथाविजिइननामहिप
रखोइ सो वामावश होइहै लिखोयंत्रमैजोइ ३३॥ प्रा
णदुखअरुपणकैचित्तलेगावेताल होइवशीआडि
चलीआवोताकेपास ३४॥ वारपानिअरुकाष्टलेहि वि
ताकीजाइसूतवस्त्रपैजो लिखिकुर्कटरक्तभंगाइ ३५॥
नामअरीसोंयंत्रकोंडलाटोभैरेजोकोइ तवगाडैजुम॥
सानमेवैरीनाशहोइ ३६॥ अल्पदिनममे कोपवंतय
हयंत्रकदापिनहीदेनो द्वितीयविधि ।स्यामचतुरदश
कीकैअवंमवटकेहेठ अयुतमैयायंत्रकोंकरेनक
कुअलसैट ३७॥ नागफणाकीकलमसोंचारपदार्थ
प्राप्तिहोइ ब्रह्महत्नकीकलमजेतनयातभेरेज्ञकोइ नि
श्चयजानोहेप्रियेदारिद्रहानीहोइ ३८॥ पीपलमू
लाहिवेठिकेलिखिसहस्रवनाइ गोऊतमनासिलअ
रुतगरलेहिकएस्रलाइ ३९॥ भूर्जपत्रपरलिखेजो
कार्यचाहेसोहोइ विपुलभोगप्राक्रमविल्वपत्ररसवि
लषशाखाकलमसोंअभस्थानेएकांतमेबैठभूर्जप
त्रपैजगसहस्रलिखेवाचासिद्धिहोवेसही अर्कपत्र

यं॰ द॰ यं॰
४

रतअर्कपत्रपैमंत्रिनकरयरिपुकेनामसंगअष्टोत्तरमान
यंत्रभैरवकिकरैसबांधेतोरिपुकोंमृत्युनतापदुःखप्राप्ति
होइसही हरिद्राजलसोंहस्तेपखाणपैरभैरहरिहार
गाडैनरोनिनप्रतिकलहहोवे॥ कुटकंडुकोरसका
हैभूर्जपत्रपैलिखिधूपदेगलबांधेतोयाचौथ्यापका
नापनाशै भंगरावसलयभूर्जदलतापैलिखकेयाव
कंठमांहिपावेविजैवादविवेनरनार ४०॥ लक्ष्यंत्रक
रिमंत्रसोंहोमकरैदशांशा मिसरीमालीघीउलेसरसों
लेयनिरसंस ४१॥ जोजोचाहैहोयसोयातेनिश्चयजा
नु शुद्धवारताहौकहीप्राणप्रियामनमानु ४२॥ गो
रोचनकुंकुमअगररभूर्जपत्रदललेइ धूपदीपनैवेद्यद
निलिखकेताकोदेइ ४३॥ कुरुपचढावेयंत्रकोजलदे
हिप्रवाह स्वमविवेनिसअन्तमेहमतहमजेगनिरूपाहि
४४॥ सकलकामनासिद्धहोवेजवनमुकज्ञहोवे सु
भवरदायकहोइबोहमतहमवाकोजोइ ४५॥ जवआ
वेकृसाष्टमीतवतवजेवलिदेहि वीरदेवदनयंत्रकोंता
कोवसीरदेहि ४६॥ कृष्णडदरदतिलपारकरायुनसों

लेइमिलाइ बलीवीरकोदेईयेबासिवुहरसेवनाइ ४७॥ हे
गिविजैनुवमसलकोहोसभदियोवनाइ भुषितिहारीमीतसोहो
सवादियोवनाइ भुधिकातिहारीमीतसोंहोसबदियोवनाइ ४८॥
हमपनहीसनाउनाडुष्टकुटिलजोहोइ दुर्लभसुरनरदेवनाप
विपिसबकोजोइ ४९॥ कीलकसबकोंहोगयोकलयुग
युगकेमांहि दयतुमकोयायंत्रकोवाकोकीलयोनांहि ५०
तुवसत्ताकोयंत्रयेहिनिश्चयजानोनाहि याखोगुह्यपरम
गुह्यकोऽज्ञानयनाहि ५१॥ इतिश्रीपंचदशायंत्रमाहात्म्यं
शिवकांडेसमाप्तिमगात् ॥०००००००००००००००